**BHDC-134**

# बी.ए. कार्यक्रम
# (बी.ए.जी.)

## सत्रीय कार्य
## (जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों के लिए)

**पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-134**
**हिंदी गद्य साहित्य**

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

# हिंदी गद्य साहित्य
# सत्रीय कार्य

**पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–134 / 2022**

आपको हिंदी गद्य साहित्य पर आधारित पाठ्यक्रम बी.एच.डी.सी.–134 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के तीनों खंडों पर आधारित है।

**उद्देश्य** : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको हिंदी गद्य साहित्य तथा उसकी प्रमुख रचनाओं और उनके रचनाकारों से परिचित कराना है। हिंदी गद्य साहित्य का वास्तविक प्रारंभ आधुनिक युग में हुआ। गद्य की विविध विधाओं के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, रिपोतार्ज आदि का अध्ययन निहित है। इस पाठ्यक्रम में आप हिंदी गद्य की तीन विशिष्ट विधाओं उपन्यास, कहानी तथा निबंध का अध्ययन करेंगे और उनकी विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम पर आधारित सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको हिंदी गद्य साहित्य के संदर्भ में कितनी समझ और दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

**निर्देश :** सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है :

---

अनुक्रमांक : ....................................................................

नाम : ..........................................................................

पता : ...............................................................................

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : .................................................

सत्रीय कार्य कोड : ..........................................................

अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ........................................

दिनांक : ..................................................................................

---

## सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1 तथा 2 तथा 3 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य हिंदी गद्य साहित्य की विशिष्ट रचनाओं और उनके रचनाकारों के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।

2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। एक प्रश्न में उपन्यास अथवा, कहानी अथवा निबंध से कुछ अंश उद्धृत किए गए हैं जिनकी संदर्भ साहित्य व्याख्या करनी है। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी हिंदी गद्य साहित्य

संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप उपन्यास, कहानी तथा निबंध की व्याख्या–विश्लेषण में भी समर्थ हो सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास अवश्य जमा करा दें।

4. सत्रीय कार्य जमा करने की तिथि :
   - दिसम्बर माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 31 अक्टूबर
   - जून माह की सत्रांत परीक्षा के लिए– 30 अप्रैल

**उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।**

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

**यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :**

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

**शुभकामनाओं सहित!**

**नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।**

# हिंदी गद्य साहित्य
# (BHDC 134)
# सत्रीय कार्य

**पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी–134**
**सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी–134/टीएमए/2022**
**कुल अंक 100**

## खंड–क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10 × 2 = 20

(क) इतना जल इतनी शीतलता हृदय की प्यास न बुझी। पी सकूँगी ? नहीं तो जैसे बेला में चोट खाकर सिंधु चिल्ला उठता है, उसी के समान रोदन करूँ? या जलते हुए स्वर्ण गोलक सदृश अनंत जल में डूब कर बुझ जाऊँ ?'' चम्पा के देखते–देखते पीड़ा और ज्वलन से आरक्त बिम्ब धीरे–धीरे सिंधु में चौथाई–आधा, फिर संपूर्ण विलीन हो गया। एक दीर्घ निश्वास लेकर चम्पा ने मुँह फेर लिया। देखा, तो महानाविक का बजरा उसके पास है। बुद्धगुप्त ने झुक कर हाथ बढ़ाया। चम्पा उसके सहारे बजरे पर चढ़ गयी। दोनों पास–पास बैठ गये।

(ख) बगीचे को आँख से एक साथ बहुत लोग देख सकते हैं, पर उसमें के फल नहीं खा सकते। जहाँ देखने का भी दाम लगता है या कुछ आदमियों का देखना बिना बंद किये देखा नहीं जा सकता, वहाँ दृष्टि–सम्पर्क की इच्छा भी मुश्किल में डाल देती है। पर जहाँ एक की इच्छा दूसरे की इच्छा का बाधक न होकर साधक होती है, वहाँ एक ही वस्तु का लोभ रखने वाले बहुत से लोग बड़े सद्भाव के साथ रहते हैं। लुटेरे या डाकू इसी प्रकार दल–बद्ध होकर काम करते हैं।

## खंड–ख

2. हिंदी के प्रारंभिक गद्य लेखन पर प्रकाश डालिए। 15
3. 'त्याग–पत्र' के संरचना शिल्प का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए। 15
4. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी (प्रत्येक पर लगभग 200–250 शब्दों में) लिखिए : 5 × 2 = 10
   (क) 'वापसी' का कथासार
   (ख) एकांकी नाटक

## खंड–ग

5. 'लोभ और प्रीति' के भाव–पक्ष पर प्रकाश डालिए। 15
6. 'सहस्र फणों का मणि–दीप' की शैली का विश्लेषण कीजिए। 15
7. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी (प्रत्येक पर लगभग 200–250 शब्दों में) लिखिए : 5 × 2 = 10
   (क) हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध साहित्य
   (ख) 'लोभ और प्रीति' की भाषा